काव्य संग्रह

हर कण मोती

विन्ध्येश्वरी प्रसाद त्रिपाठी

पिता का नाम	: श्री शिव प्रसाद त्रिपाठी
जन्म तिथि	: 20 अगस्त' 1993
पता	: ग्राम-तिलया, पोस्ट-कोटखास जिला-गोण्डा (उ.प्र.)
शैक्षणिक योग्यता	: स्नातक (हिन्दी, संस्कृत और भूगोल), परास्नातक (भूगोल), यू.जी.सी. जे.आर.एफ. के उपरान्त रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर मध्यप्रदेश से भूगोल विषय में शोधरत
रचना विधा	: मुख्यता छंदबद्ध कविता, मुक्तक, गीत, कहानी, लघुकथा, निबंध आदि
प्रकाशित	: परों को खोलते हुए (अंजुमन प्रकाशन) अतुकांत कविताओं का साझा संकलन में कविताएँ प्रकाशित, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित
ब्लाग	: कविता संसार, भूगोल
यू टयूब चौनल	: latest hindi kavita दिल को छू लेने वाली कविताएँ
ई मेल	: vindeshwari3@gmail.com
सम्पर्क सूत्र	: 9565160172

हर कण मोती

काव्य संग्रह

विन्ध्येश्वरी प्रसाद त्रिपाठी



लोकोदय प्रकाशन

लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2019
आवरण : संकल्प
मुद्रक : विकास कम्प्यूटर & प्रिन्टर्स
ISBN : 978-93-87149-00-0

HAR KAN MOTI

By V. P. TRIPATHI

मूल्य: ₹150.00

लोकोदय प्रकाशन प्रा. लि.
65/44, शंकर पुरी, छितवापुर रोड, लखनऊ-226001
दूरभाष : 9076633657
ई-मेल : lokodayprakashan@gmail.com

अनुक्रमणिका

मुक्तक

लगे वो जल परी जैसी, अधर मधु हास बिखराती।
वो तरुणी वारुणी जैसी, नशा नस नस में भर जाती।।
लगे ज्यों दिव्य मूरत सी, रचा खुद ब्रह्म ने जिसको।
हुई मदहोश महफिल पर, तुरत ही ताजगी आती।।

अलग है बात कुछ तुझमें, नहीं हर एक में मिलती।
भरी तू दोपहर जैसी, सुहानी शाम भी लगती।
निशा का मस्त आंचल तू, सुबह की ताजगी तुझमें।
स्वयं शृंगार कर उपमा, तुझे है आरती करती।

है कैसा हाल अब उनका, खबर कोई सुनाये तो।
तड़प मन की मेरे जाकर, कोई उनको बताये तो।
दरस की आस ले मन में, पड़ा मैं द्वार पर उनके।
झलक बस एक दिलबर की, कोई मुझको दिखाये तो।

तेरे दीदार में जाना, न जाने बात कैसी है।
तू जैसे जाम रिंदों का, सुबह के चाय जैसी है।
तृषा मन की बुझी मेरे, तुम्हारी इक झलक पाकर।
मैं चातक प्यास से व्याकुल, तू स्वाती बूँद जैसी है।

इबादत हो अगर सच्ची, प्रकट तो ईश हो जाते।
पुकारा था उन्हें दिल से, तो क्यों कर वो नहीं आते।
तड़प धरती की सच्ची थी, समंदर में दिखा अंबर।
कि यूँ ही दरम्यां दिल के, नजर दिलबर मेरे आते।

सुकूनोचौन छीना है, तुम्हारी याद ने प्रियवर।
चुरायी नींद आँखों से, तेरे अंदाज ने प्रियवर।
तू जीनत है अमानत है, अजब नायाब मोती है।
भरा है रंग जीवन में, हमारे आप ने प्रियवर।

सजी दुल्हन के जोड़े में, हंसी वो रूप की रानी।
सुनहरे रंग की बिंदिया, चमक माथे पे नूरानी।
हरी चूनर खिला चहरा, गुलाबी होंठ की लाली।
हजारों हुस्न देखे पर, नहीं उसका कोई सानी।

तुम्हारी सादगी देखी, तुम्हारा साज देखा है।
मगर हर रूप में जाना, जुदा अंदाज देखा है।
तुम्हारी सादगी चमके, कुमुदिनी फूल के जैसे।
तुम्हारे साज में हमने, खिला ऋतुराज देखा है।

खुली आँखें रहीं मेरी, अचानक देखकर उनको।
धरा पर ईश ने भेजा, रमा रति उर्वशी किसको।
अगर नख शिख करूँ वर्णन, तो केवल लफ्जबाजी है।
हमारी मति हुई जड़ सी, निहारूँ एकटक उनको।

तुम्हारी इक झलक पाकर, हमें इतनी खुशी होती।
किसी प्यासे को ज्यों पानी, किसी भूखे को ज्यों रोटी।
कई दिन से नहीं देखा, लगे कुछ गुम गया मेरा।
दिखे जब आज वो मुझको, मिला अनमोल सा मोती।

परायी वो अमानत है, मेरा अधिकार ना उस पर।
सड़क का एक पत्थर हूँ, नहीं उसका कोई रहबर।
कदम से लग कहा मैंने, चले क्या साथ हम दोनों।
बनो मत बावले प्यारे, कहा उसने मुझे हंसकर।

अभी भी याद आती हैं, सुहानी शाम की बातें।
बड़े ही चाव से करना, बिना वो काम की बातें।
कहा तुमने बहुत हमसे, सुना हमने बहुत लेकिन।
अधूरी आज भी चुभती, बिना अंजाम की बातें।

घने बरगद तले अपना, भरी वो दोपहर मिलना।
पसीने से सने चेहरे, दुपट्टे से हवा करना।
किया वादा तो पूरी पर, अधूरी आस थी अब भी।
जुदाई की घड़ी आयी, हथेली खीझ कर मलना।

चले चर्चा कोई जब भी, तेरा ही नाम आता है।
भुलाता हूँ तुझे लेकिन, सुबह ओ शाम आता है।
अधूरे प्यार का किस्सा, अभी हिस्सा है यादों का।
कसम वो तीसरी तेरी, मरा गुलफाम जाता है।

चली दिल पर मेरे छूरी, शहादत पा गये हम तब।
तड़पता छोड़कर मुझको, गये वो मुस्कुरा कर जब।
बिना उनके लगे सूना, कदम बढ़ते नहीं आगे।
नहीं मालूम है मुझको, दुबारा कब मिलेंगे अब।

बहुत मायूस था दिन, नहीं मैं मिल सका उनसे।
हुआ मुझसे ही धोखा ये, नहीं कोई गिला रब से।
अगर उनसे मिला होता, परेशां वो नहीं होते।
मुवाफी दीजिए हमको, खतां होगी नहीं अब से।

खुमारी सी रही तारी, नशा सा छा गया मुझ पर।
बढ़ी दिल की मेरे धड़कन, हुआ तन में अजब सरसर।
जमीं पर पाँव ना टिकते, गगन में घूमता मानो।
हुआ दीदार जब उनका, समय भी रुक गया पल भर।

सभी उपमान फीके हैं, तुम्हारे रूप के आगे।
तपिश दीपक की जैसे हो, दहकते धूप के आगे।
नहीं ऐसा कोई पार्लर, संवारे रूप जो तेरा।
परियाँ भी लगे फीकी, मेरे महबूब के आगे।

परिंदा प्यार का यारों, मेरा मन शायराना है।
बुनूँ मैं नीड़ शब्दों का, वहीं दुनिया बसाना है।
अगर तुम आ सको आओ, क्षितिज तक हम उड़ेंगे।
मुहब्बत-पंख की ताकत, हमें भी आजमाना है।

बहुत वो खूबसूरत था, तुम्हारा साथ ऐ हमदम।
कहें दो चार पल की क्या, हमें सौ साल लगते कम।
मिले मौका गुजारें हम, वहीं कुछ उम्र तक रुक कर।
जुदा होने की बातें सुन, हुई थी आँख अपनी नम।

कहूँ मैं बात क्या मन की, है मेरा मन नहीं मेरा।
हुआ वश में तुम्हारे ये, है जादू कौन सा फेरा।
दशा मेरी है पागल सी, नहीं कुछ सूझता मुझको।
दिखे हर एक कण में ही, सलोना रूप वह तेरा।

मुहब्बत खूबसूरत है, इसे बदनाम मत करना।
देना दिल तबीयत से, कभी अहसान मत करना।
खुदा की ये नियामत है, नहीं हर एक को मिलती।
ये नेमत हाथ लग जाये, कभी इंकार मत करना।

मुहब्बत खेल मत समझो, खुदा की ये इबादत है।
यही इंसान की फितरत, यही शमसीर कुदरत है।
मुहब्बत का परिंदा है यहाँ, हर शख्स हर जर्रा।
दिलों में क्यों भरा नफरत, जहां में क्यों अदावत है।

बुरा वो मान लें शायद, करूँ इजहार यदि उनसे।
गिरा दें मुझको नजरों से, जता दूँ प्यार यदि उनसे।
अगर वो साथ चलते तो, जहन्नुम भी हंसी होता।
खुदा भी मुझको मिल जाए, मिले अभिसार यदि उनसे।

हमारी खूबियाँ भूलो, न चाहो तुम हमें जाना।
बहुत आसां नहीं होगा, ख्यालों से मिटा पाना।
गिले शिकवे बहुत होंगे, कई गुस्ताखियाँ होगी।
रहे बस याद कोई था, तुम्हारा एक दीवाना।

बजा है साज मधुरिम फिर, सुना आवाज जब उनका।
मिली सारी खुशी हमको, हुआ दीदार जब उनका।
खुदा भी मिल गया होता, अगर हाँ कर दिये होते।
कयामत आ गया मुझ पर, मिला इंकार जब उनका।

कभी सोचा नहीं मैंने, कि ये भी सोच लेंगे सब।
हमारी कल्पना को भी, किसी से जोड़ देंगे सब।
लिखूँगा मैं कोई कविता, बनेगी सौ कहानी फिर।
अधूरी हर कहानी में, नया कुछ जोड़ देंगे सब।

मेरा दिल और का धन है, वो दिल और उनका है।
किसी मैं और का रहबर, साहिल और उनका है।
मिले होते अगर पहले, तो शायद सोचते लेकिन।
सफर मेरा अलग उनसे, मंजिल और उनका है।

हमारे पीछे तुम आयीं, तुम्हारे पीछे हम भागे।
न बोलूँ मैं तेरे आगे, न बोलो तुम मेरे आगे।
जुबां खामोश है लेकिन, निगाहें बोल देती हैं।
हम भी रात भर रोये, तुम भी रात भर जागे।

हम भी मुस्कुराते हैं, तुम भी मुस्कुराते हो।
सबसे हम बताते हैं, सबसे तुम बताते हो।
लगा ये रोग कैसा है, हमारे दिल को ऐ जाना।
तुमसे हम छुपाते हैं, हमसे तुम छुपाते हो।

तुम्हारी भावनाओं को, समझता हूँ मगर चुप हूँ।
सदा खामोश लब की मैं, सुनता हूँ मगर चुप हूँ।
इशारों ही इशारों में, जो भेजा खत हमें तुमने।
निमंत्रण तेरी आँखों का, पढ़ता हूँ मगर चुप हूँ।

हमारी वेदनाओं को, नहीं तुम जान पाओगो।
कहेगो अश्क को पानी, हंसोगे टाल जाओगे।
हुआ बेदर्द हाकिम जब, सुनायें दर्द हम किसको।
हमारी कब्र पर आकर, सभी कुछ जान जाओगे।

हम से लोग कहते हैं, जो मन में है बयां कर दूँ।
लूटा है मुझे किसने, मैं चोरी ये अयां कर दूँ।
दिल की बात दिल में ही रहे, होगा यही बेहतर।
उठेंगी आग की लपटे, जो शोले को हवा कर दूँ।

मगन अपनी वो महफिल में, इधर आँसू बहाता हूँ।
लगा जो चोट इस दिल को, उसे हंसकर छुपाता हूँ।
सुना है मेरी गीतों पर, बहुत वो दाद देते हैं।
उन्हें मालूम ना शायद, कि नगमे दर्द गाता हूँ।

हम से लोग कहते हैं, जो मन में है बयां कर दूँ।
लूटा है मुझे किसने, मैं चोरी ये अयां कर दूँ।
दिल की बात दिल में ही रहे, होगा यही बेहतर।
उठेंगी आग की लपटें, जो शोले को हवा कर दूँ।

मगन अपनी वो महफिल में, इधर आँसू बहाता हूँ।
लगा जो चोट इस दिल को, उसे हंसकर छुपाता हूँ।
सुना है मेरी गीतों पर, बहुत वो दाद देते हैं।
उन्हें मालूम ना शायद, कि नगमे दर्द गाता हूँ।

हकीकत खूबसूरत है, सभी ये जानते लेकिन।
ख्यालों में ही जीते हैं, उसे सच मानते लेकिन।
अगर हों साथ ये दोनों, मजा फिर दो गुना होगा।
मजबूरी या कि आदत में, इसे सब टालते लेकिन।

शाहों से बगावत का, इरादा ठान बैठा हूँ।
उसे अपना बनाने की, तमन्ना पाल बैठा हूँ।
गगन का वो सितारा है, कि मिलना गैर मुमकिन है।
उसी मगरूर तारे को, मैं अपना मान बैठा हूँ।

कहें हम गैर को अपना, मगर इतना नहीं कहते।
परायी चीज अच्छी हो, मगर अपना नहीं कहते।
पले जो और आँखों में, सुनहरे ख्वाब बनकर के।
जिसे देखा नहीं खुद हो, उसे सपना नहीं कहते।

जिसे छू भी नहीं सकते, उसे अपना कहें क्योंकर।
किसी की याद में रोएँ, तड़प इतना सहें क्योंकर।
तमन्ना दिल में उसकी हो, रहे जो सिर्फ अपनी ही।
गयी वो गैर बाँहों में, हमीं तन्हा रहे क्योंकर।

नदी की धार सबकी है, न रोकें बाँध कर इसको।
मिलेगी जाके सागर से, करें आजाद हम इसको।
इसी में है भलाई कि, कुदरत को न छेड़ें हम।
सुधारें आदतें अपनी, करें आबाद हम इसको।

तेरा अहसास ही हमको, वो आराम देता है।
नशे में चूर रिंदों को, ज्यों साकी थाम लेता है।
अगर मिल जाओ तुम हमको, तो सोचो क्या मेरा होगा।
महकते रात भर सपने, जो कोई नाम लेता है

इजाजत वो अगर दे दें, जमाने को बता दूँगा।
मिलना आप गर चाहें, उसका मैं पता दूँगा।
नहीं मालूम उसको भी, हकीकत है वही मेरा।
तसव्वुर से खता होगी, अगर उसको जता दूँगा।

उसे मैं नाम क्या दे दूँ, समझना गैर मुमकिन है।
हकीकत है फसाना है, ये कहना गैर मुमकिन है।
समझ बस लीजिए इतना, वो मेरी साँस है धड़कन।
ख्यालों से मेरे बाहर, वो मिलना गैर मुमकिन है।

नजर तेरी है खंजर सी, जिगर को चाक करती है।
घटा जुल्फों की लहरा कर, तू दिन में रात करती है।
शहर में आजकल चर्चे, तेरी कातिल जवानी के।
जवां दिल है तेरी रैय्यत, तू उस पर राज करती है।

गली में जब निकलती हो, कभी खुद को सजा करके।
कई दिल हैं मचल जाते, झलक बस एक पा करके।
है ये तो लाजिमी जाना, जो खुद पर नाज करती हो।
खुदा भी नाज करता है, हसीं तुमको बना करके।

न मैं हूँ रास्ता तेरा, न तू मेरी ही मंजिल है।
नहीं आसां तुझे पाना, भुलाना भी न मुमकिन है।
कई सपने अधूरे हैं, कई अरमान बाकी हैं।
अधूरी हसरतों में ही, तुम्हारा नाम शामिल है।

वो निकले बन संवर छत पर, लगा गुलनाज बिखरा है।
गगन में चाँद को देखा, तो चहरा आज उतरा है।
उदासी का शबब मैंने, जो पूछा चाँद से रुककर।
इशारा कर दिया छत पर, कमर नायाब उतरा है।

नहीं मालूम था मुझको, उन्हें मैं याद हूँ अब भी।
दुआ देकर बताया ये, कि तेरे साथ हूँ अब भी।
करे ईश्वर कृपा मुझ पर, दुआ सच कर सकूँ उनकी।
चलो इतना समझ आया, विगत इतिहास हूँ अब भी।

नहीं ये माँगता तुम से, मुझे अपना पता दे दो।
नहीं ये आरजू मेरी, दुआ दे दो वफा दे दो।
न माँगू चाँद तारे या, जहां भर की खुशी माँगू।
मेरे कातिल मुझे मेरा, वही टूटा जिया दे दो।

नहीं वो स्वर्ग की देवी, नहीं वो मूर्ति मंदिर की।
नहीं वो कल्पना कवि की, नहीं वो स्वप्न सुंदर की
नहीं देखा नहीं जाना, सुना भी है नहीं जिसको।
मेरी कविता में वर्णन है, उसी मनमीत प्रियवर की।

बलाएँ आपकी हर लूँ, सजा कर आरती कर दूँ।
निछावर प्रेम से सारे, जहां की हर खुशी कर दूँ।
बसो मन में मेरे आकर, यूँ ही साज सजकर तुम।
मेरे मनमीत तुम पर मैं, समर्पित ज़िन्दगी कर दूँ।

अगर नखशिख करूँ वर्णन, नजर उसको न लग जाए।
है ऐसी दिव्य सूरत ये, कि उस पर क्या कहा जाए।
जला खुद को बना काजल, लगा दूँ होठ के नीचे।
मेरा मनमीत शायद फिर, बुरी नजरों से बच जाए।

किसी के इश्क में जीना, बहुत अच्छी ये आदत है।
किसी का इश्क पा लेना, बहुत अनमोल दौलत है।
शुकूनो चौन धड़कन औ, किसी की ज़िन्दगी बनना।
समझ लेना कि रब तुम पर, मेहरबां है नियामत है।

हमारे गम हमें यारों, नहीं उतना सताएँगे।
किसी दिन वो खुशी अपनी, मनाना भूल जाएँगे।
बुरा है वक्त ये मेरा, उछालो कि मारो खूब सब पत्थर।
कभी कदमों तले अपने, ये पर्वत लेट जाएँगे।

नहीं देखो हमारा गम, हमें कितना सताता है।
कि वो देखो खुशी कैसे, मनाना भूल जाता है।
बहुत मगरूर वो यारों, समय की चाल न समझे।
अकड़ के बात करता है, मुकर के भाग जाता है।

किसी की भावना आहत, किसी को चोट लगती है।
किसी का टूटता दिल तो, किसी की आँख बहती है।
कई मायूस हो जाते, कई मुँह फेर लेते हैं।
सचाई चीखकर अपनी, सही जब बात कहती है।

अगर जिद ठान ले कोई, तो कुछ मुश्किल नहीं होता।
लगन जिद औ समर्पण बिन, फतह हासिल नहीं होता।
कहे दुनिया गलत तुमको, सही करके दिखा देना।
बिना छैनी लगे पत्थर, खुदा काबिल नहीं होता।

अगर हो मुश्किलें पथ में, तो मंजिल तय फतह होना।
मगर भयभीत हो इनसे, न साहस धैर्य को खोना।
बड़ी हो मुश्किलें जितनी, सफलता भी बड़ी उतनी।
धधकती आग में तपकर, निकलता है खरा सोना।

बहा देते लहू अपना, वतन के आन की खातिर।
कटा देते हैं सिर हंसकर, हिंद की शान की खातिर।
उड़ी, सुकमा, हो या चाहे, सुरक्षा देश की सरहद।
कफन वो ओढ़कर चलते, माँ के मान की खातिर।

नहीं बदला कहीं कुछ भी, अभी हालात वैसे हैं।
वही हैं मारते सैनिक, वही घुसपैठ करते हैं।
महज तुम चीखते राजन, लचर हैं नीतियाँ सारी।
दुश्मन है अभी हाबी, हम बात-ओ-चीत करते हैं।

खताएँ सौ तेरी तुझको, बराबर धूल लगती हैं।
कमी छोटी सी इक मेरी, तुझे बन शूल चुभती हैं।
तुम्हारा मान करता हूँ, अतः सहता हूँ मैं तुमको।
अगरचे बात पर बातें, बहुत माकूल उठती हैं।

तेरी भाषा में दूँ उत्तर, रहा फिर मान क्या तेरा?
तुम्हारी मूर्खताएँ हैं, कहूँ अभिमान या तेरा।
तुम्हें माना है गर हमने, तो सीमा लाँघते क्यों हो?
हमें कुछ मान गर दोगे, गिरे सम्मान क्या तेरा?

जरा मजबूरियाँ अपनी, अगरचे हम भी कुछ तो हैं।
बहुत बलवान तुम लेकिन, जरा दम हम भी रखते हैं।
जहाँ पाते हो तुम मौका, तो चौका मार लेते हो।
तुम्हारे जैसे लोगों को, बखूबी हम समझते हैं।

मिले यदि लाभ कुछ इनको, तो जैसे नोच लेगें ये।
जहाँ हो आग गर थोड़ी, तो हमको झोंक देगें ये।
हिफाजत हम तेरी करते, बड़ा एहसान करते हैं।
मिला मौका अगर इनको, तो खंजर भोंक देगें ये।

अरे माना कि हम छोटे, मगर शोषण न कर भाई।
निहित निज स्वार्थ के नाते, परेशां कर न अब भाई।
पता शायद नहीं तुमको, मगर इंसान हैं हम भी।
हमें जीने दो तुम सुख से, न चूसो खून अब भाई।

मिलेगा सिर्फ उतना ही, लिखा जो भाग्य में होगा।
समय से और पहले भी, नहीं कुछ हाथ में होगा।
तड़प ले चाहे जितना हम, मुताबिक खुद के वो देता।
किसी को पहले हो जाए, किसी का बाद में होगा।

बुरे का संग किया तुमने, कहाँ परिणाम शुभ होगा।
करेगा पार क्या तुमको, फंसा मझधार खुद होगा।।
बड़ों से की बगावत जो, नहीं रणनीति अच्छी थी।
किसी का दिल दुखाया गर, तुझे भी खूब दुख होगा।।

रोला गीत

सिन्धु सी नैनों वाली

तेरे सुन्दर नैन, नैन में सागर तैरे।
उसमें डूबा चाँद, चाँद को दुनिया हेरे।।
मिला नहीं जब चाँद, तुझे उपमा दे डाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नैनों वाली।।

तेरे काले केश, अमावस जैसे लगते।
भटक गए सुकुमार, अलक में उलझे रहते।।
चाँद अमावस साथ, अरे अद्‌भुत है आली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नैनों वाली।।

वीणा की झंकार, मधुर श्रवणों में घोले।
अरुण ओष्ठ पुट खोल, बैन जब-जब तू बोले।।
नहीं सुनूँ झंकार, लगे सब सूना खाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नैनों वाली।।

धरे पयोधर वक्ष, कलश अमृत के लगते।
पीकर वय सुकुमार, पुष्ट तन मन से होते।।
करते हैं शृंगार, पयोधर तेरे आली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नैनों वाली।।

गालों का अरुणाभ, चकित सूरज को करता।
किन्तु चंद्र शीतल्य, कपोलों में खुद भरता।।
आह्लादित मन गात, रूप लावण्यों वाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

लिपट चंद्रिका चंद्र, करें वे प्रणय परस्पर।
निरखें उन्हें चकोर, भाग्य को कोसें सत्वर।।
हाय रूप सुकुमार, कंचु अरुणाभा वाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

व्याकुल हुए चकोर, मेघ चंदा को ढक ले।
रसधर सुन्दर अधर, हृदय कहता है छू ले।।
सीमा अपनी जान, लगे सब रीता खाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

रहे उनींदे नैन, सजग अब निरखे उनको।
देख देख हरषाय, तृप्त करते निज मन को।।
हुए अधूरे आप, नहीं वह मिलने वाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

उडगन छुपते भोर, सूर्य जब चमके नभ में।
धरा जगी चहुँओर, सचल जीवन हो जग में।
हुये अस्त कविराय, उदित वह होने वाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

जिसमें ढूँढा काव्य, नहीं वह काव्य हमारी।
जहाँ काव्य मौजूद, पहुँच न दृष्टि हमारी।।
नहीं उभरते भाव, शब्द आडम्बर खाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

अहा कपासी रूप, भीत छूने से लगता।
कहीं लगे न मैल, प्रदूषित बने धवलता।।
फीका लगे तुषार, सार आगारों वाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

निरभ्र रूप आकाश, वही है उतरा मानो।
द्वय रवि उसके नैन, तेज है बिखरा जानो।।
उर के भीतर उतर, रही है उसकी लाली।
स्वर्ग परी समरूप, सिन्धु सी नयनों वाली।।

ठगे गये हम लोग

बनते संत महान, काम घटिया ही करते।
खोले धर्म दुकान, कर्म बनिया के करते।।
उनसे लेकर मंत्र, हृदय विह्वल हो रोया।
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

छोड़ो माया मोह, नित्य हमको समझाया।
कब्जाकर पर भूमि, आश्रम निज बनवाया।।
शैम्पू साबून तेल, बेंचते संत वणिक या।
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

चमत्कार बहु भांति, भांति अनुभव करवाते।
भूले सारा ज्ञान, जेल अपवित्र बताते।।
परम संत क्या जेल, पलंग जंगल हो या?
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

एक दिवस प्रण ठान, संत जंगल में बैठे।
लाएगा करतार, साधना के बल ऐंठे।।
कहाँ गया वो तेज, आज तू कारा सोया?
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

किस पर हो विश्वास, जगत ठग से बोझिल है।
सदमार्ग बताता संत, किन्तु छल में शामिल है।।
जप तप व्रत औ ध्यान, लगे जीवन ही खोया।
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

अपना काम निकाल, भूल हमको वो जाता।
कहता उसको आम, बना जो भाग्य विधाता।।
मन पछताये खूब, बेल विष नेता बोया।
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

हमको ले पहचान, वोट लेना जब होता।
सबसे दुआ-सलाम, कौल जमके वह करता।।
सुधरा चतुर सियार, लगे हर जन को गोया।
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

जीता चतुर सियार, चाल अब बदली उसकी।
भूला सारे कौल, हौल अब मन में उठती।।
टूटे सारे ख्वाब, हृदय विह्वल हो रोया।
ठगे गए हम लोग, देख अपनापन खोया।।

आर्यपुत्र आ लौट

हम ऋषि के संतान, विश्व परिवार हमारा।
शांति शांति बस शांति, यही था अपना नारा।।
भूले हम यह ज्ञान, बने फिरते बेचारा।
आर्यपुत्र आ लौट, देश ने तुझे पुकारा।।

भारतवंशी जाग, आत्मगौरव को पाओ।
स्वर्ग सदृश यह देश, इसे फिर स्वर्ग बनाओ।।
सत्य, अहिंसा, त्याग, त्याग पश्चिम स्वीकारा।
आर्यपुत्र आ लौट, देश ने तुझे पुकारा।।

परम्परा वह राम, भरत, लक्ष्मण के जैसी।
सकल विश्व को छान, कहाँ पाओगे ऐसी।।
भौतिक सुख का लोभ, समझ मृग-तृष्णा सारा।
आर्यपुत्र आ लौट, देश ने तुझे पुकारा।।

मात-पिता, गुरुश्रेष्ठ, धरा के देव कहाए।
पर्यावरण बचाव, हेतु जड़ पूज्य बताए।।
भारी है अन्याय, सत्य झूठे से हारा।
आर्यपुत्र आ लौट, देश ने तुझे पुकारा।।

धर्म अहिंसा श्रेष्ठ, किन्तु कायरता है क्यों?
भरत वंश के लाल, शत्रु से डरता है क्यों?
सीमा पर घुसपैठ, शत्रु ने फिर ललकारा।
आर्यपुत्र आ लौट, देश ने तुझे पुकारा।।

भारत राज्य अखण्ड, खण्ड फिर क्यों करते हैं?
एक मनुज परिवार, जाति में क्यों बंटते हैं?
टूट रहा परिवार, नष्ट है भाई चारा।
आर्यपुत्र आ लौट, देश ने तुझे पुकारा।।

माता पिता

पिता धरा की शक्ति, धारणा के वाहक हैं।
माता धरा समान, सृष्टि की संचालक हैं।
दिया आपने जन्म, न उतरे ऋण की थाती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

पिता धरातल ठोस, और माँ ममता धारा।
पिता स्वयं वट वृक्ष, छाँव माँ ने पैसारा।
हम सब फल रसदार, मिष्ठता उनसे आती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

पिता अटल गिरिराज, और माँ झरना पावन।
पिता दुपहरी जेट, मास माँ रिमझिम सावन।
जेठ ताप कम दाब, फुहारें सावन आती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

पिता सूर्य की ज्योति, जगाते बरबस हमको।
माता सुंदर रात, सुलाती सारे जग को।
बिना रात के दिवस, दिवस बिन रात न आती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

पिसता आटा पिता, और माँ गर्म चपाती।
पिता दीप में तेल, बनी माँ जलती बाती।
पिता वही है गीत, लोरिया जो माँ गाती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

विस्तृत अम्बर तात, और माँ उसमें तारा।
पत्थर के शिव पिता, मातृ गंगा की धारा।
निकली शिव के भाल, गंग त्रय ताप मिटाती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

वे नारियल समान, और माँ उसमें रस सी।
गर्म दूध सम तात, मातु ज्यों ठंडी लस्सी।
दूध करे तन पुष्ट, जुड़ाती इससे छाती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

स्वाती बूँद समान, पिता माँ सीपी होती।
पालन पोषण जनन, बने जिससे हम मोती।
सब उनकी ही देन, हमारी कुछ न थाती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

दिया आपने जन्म, आपके आभारी हम।
दो हमको आशीष, बने आज्ञाकारी हम।
जब तम हो घनघोर, जलूँ बन दीपक बाती।
मात-पिता गुणगान, आज ये जिह्वा गाती।

चौपाई गीत

दुनिया है रंगों का मेला

दुनिया है रंगों का मेला।
कितना उजला कितना मैला।।

जीवन ने बहु रंग दिखाया।
बचपन अरुण रंग मन भाया।।
यौवन का वह चटकीलापन।
अल्हड़ मस्ती अलबेलापन।।
धूमिल धूसर रंग बुढ़ापा।
बहुविधि चिंता त्रिविधि तापा।।
रंगरेज रंगता अलबेला।
कितना उजला..............।।

धनवानों का रंग चटकीला।
निर्धन का रंग मद्धम गीला।।
मंहगाई का रंग अनल है।
पस्त-पस्त सब प्रजा विकल है।।
हत्या घूस लूट घोटाला।
बलात्कार का मुँह रंग काला।।
कल के भारत का रंग धुधला।
कितना उजला.............।।

यह जग रंगमंच अति सुन्दर।
माया भ्रमित सकल सचराचर।।
एक रंग नायक खलनायक।
स्वामी स्वामिनि सेवक पायक।।
बहुविधि नित नव अभिनय करते।
हँसते-रोते, जनते-मरते।।
अजब-गजब रंगों का खेला।
कितन उजला.............।।

कल

कल तो हरदम कल रहता है।
कल को मनुज विकल रहता है।।

कल को किसने कब देखा है।
यह आशाओं की रेखा है।।
हमें सदा बस यह खलता है।
कभी नहीं यह कल रुकता है।।

सबकी इच्छा कल अच्छा हो।
कल से पूर्व कलन अच्छा हो।।
मित्र! आज से कल बनता है।
कल की चिंता क्यों करता है।।

कल-बल से कल पकड़ न आया।
बहुत जनों ने जोर लगाया।।
कल तो काल सदृश लगता है।
बड़े-बड़ों को कल छलता है।।

कल बहुतों का कल ले लेता।
कल को छीन विकल कर देता।।
कल सुधरेगा दिल कहता है।
नहीं आज तो कल लगता है।।

कल को कलम बदल देगी अब।
कल कर आज दिखा देगी अब।।
कलमकार वह कर सकता है।
जो करने से कल डरता है।।

दुख और जीवन

इस जीवन में दुख ही दुख है, गृह त्याग चलें वन गौतम नाई।
फिर भी संग छूट नहीं दुख से, घर बैठ सुता सुत नारि रोवाई।।
मन सूख रहा जग आतप से, अब नैन वरीष गए हरियाई।
बहु भांति विचार किया हमने, पथ कंटक झेल रहो जग भाई।।

यदि तृप्त नहीं मन तो भटके, जब तोष हुआ दुख तो मिटता है।
पर तृप्त करें किस भांति इसे, यह तो बिन बात के भी हठता है।।
हठवान बड़ा मन मान नहीं, भगवान कहो तुम ही समझाई।
पद पंकज में जब ध्यान लगे, तब छोड़ रहा मन है हठताई।।

मन की हठता सुन है तब ही, जब ही इसको तुम ढील दियो है।
कहता मन लोलुप जो तुम से, उसके सुर में सुर आप दियो है।।
निज आत्म सुनो सच वो कहता, ‘वह ईश्वर अंश’ कहे बुध भाई।
अनमोल बड़ा यह जीवन है, इसको नर वीर न व्यर्थ गवाई।।

गह सार रहें जग में डट के, दुख झंझट से अब दूर भगें ना।
जग में जब ईश्वर जन्म दिए, तब ईश दिए कुछ कार्य करें ना।।
बिन कर्म किए घर ईश गए, उनको यह सूरत क्यों दिखलाई?
डर रंच नहीं इस जीवन से, जग में रह कर्म करो कुछ भाई।।

चंद दोहे

अपनी गलती को प्रिये! मत समझो तुम भार।
दूध फटा तो क्या हुआ, कर पनीर तैयार।।

जीवन का उद्देश्य क्या, मिला हमें क्यों जन्म।
परमपिता को याद कर, करें निरन्तर कर्म।।

घृणा और पर डाह से, हो खुशियों का नाश।
प्रेम और सद्‌भाव से, मन में भरे प्रकाश।।

प्रेम और विश्वास हैं, दोनों एक समान।
जबरन ये न हो सके, चाहे जाए जान।।

दृश्य बदलते हैं प्रिये! बदलो अपनी दृष्टि।
निज नजरों के दोष से, दोषी दिखती सृष्टि।।

मेरी गलती भूलते, प्रतिदिन ही भगवान।
मैं जड़मति भी भूलता, उनका हर अहसान।।

मेरी चिन्ता है जिसे, मुझको रखता याद।
वह ईश्वर कैसे मुझे, दे सकता अवसाद।।

और नहीं कुछ दीजिए, हे! आगत नववर्ष।
मेरा भारत खुश रहे, सदा करे उत्कर्ष।।

ईश अलख लख जायगा, लख अंखिया निर्दोष।
मान बड़ाई ताक रख, ईश दिए संतोष।।

भूमि गगन वायू अनल, और संग में नीर।
अग्र वर्ण भगवान बन, विरचित मनुज शरीर।।

दुर्भागी तुम हो नहीं, मत रोओ हे! तात।
भाग्य सितारे चमकते, गहन अँधेरी रात।।

राम चंद्र के देश में, छाया रावण राज।
रामसिंह ही कर रहे, हरण दामिनी लाज।।

दुखियारी माँ भूख से, माँग मधुकरी खाय।
बेटा बसे विदेश में, खरबपती कहलाय।।

हिन्दू हिन्दू रट रहे, न जाने हिन्दुत्व।।
है सच्चा हिन्दू वही, जे निर्मल व्यक्तित्व।।

गूंगा शासक देश का, दृष्टि हीन है न्याय।
बहरी जनता भेंड़ सम, देश गर्त में जाय।।

मनुज-मनुज है अब नहीं, गया मनुजता भूल।
हृदय पुष्प में उग रहे, नागफनी के शूल।।

एफ.डी.आई. से भला, होगा देश विकास?
पैसा इटली जायगा, अपना सत्यानाश।।

रेप समय बालिग रहा, सजा समय नादान।
सच अंधा कानून है, भारत देश महान।।

गोदामों में सड़ रहा, कुंतल खरब अनाज।
तड़प भूख से मर रहा, ग्राम देवता आज।।

तुम इतनी गुणवान हो, जैसे शॉपिंग मॉल।
कसे जेब जाते सभी, आते खस्ता हाल।।

लुटे द्रोपदी देश में, कृष्ण कहाँ तुम मौन।
दुरूशासन से तुम मिले, लाज बचाए कौन।।

सत्ता बादल ओट से, बरसे भ्रष्टाचार।
दादुर टर्राते फिरें, आई मस्त बहार।।

कीचड़ से गलियाँ सनीं, चलना नहिं आसान।
बचना तो मुश्किल बहुत, आफत आयी जान।।

नैतिकता के पतन से, फैला कंस प्रभाव।
मात-पिता सम्मान नहि, नस नस में दुर्भाव।।

पश्चिम संस्कृति जी रहे, हम भूले निज मान।
कहते हम संतान कपि, जबकि हैं हनुमान।।

निज गौरव को भूलकर, बनते मार्डन लोग।
ये भी क्या मार्डन हुए, पाल रहे बस रोग।।

अपने घर में त्यक्त है, वैदिक ज्ञान महान।
महा मूढ़ मतिमंद हम, करते अन्य बखान।।

लौटें अपने मूल को, जो है सबका मूल।
पोषित होता विश्व है, सार बात मत भूल।।

मालिक सबका एक है, खुदा गॉड भगवान।
धर्म पंथ में बांटकर, भटक गया इंसान।।

निराकार साकार ही, दोनों ईश्वर रूप।
देह और छाया स–श, संग-संग हैं धूप।।

सूरज तारे चाँद सब, सगुण ईश के रूप।
नियति नियम निर्गुण कहें, अद्‍भुत भव्य अनूप।।

ईश प्राप्ति निज खोज है, खोज सके तो खोज।
मोह निशा से घिर मनुज, बाहर भटके रोज।।

आत्मरूप में जाग नर, भटक नहीं अन्यत्र।
तुझ में ईश्वर ईश तू, तू ही तू सर्वत्र।।

धूम–अग्नि दिन–रात से, सुख से दुख संयुक्त।
धूप संग ही छाँव है, सत्य कौन प्रभु उक्त।।

जीवन एक किताब है, तीन प्रमुख अध्याय।
बचपन यौवन वृद्धपन, कहैं सुकवि समुझाय।।

बचपन जीवन भूमिका, यौवन ललित निबंध।
वृद्धापन सारांश है, उत्तम काव्य प्रबंध।।

भाषा रूपी ज्ञान हो, रस चरित्र व्यवहार।
कर्म रीति से युक्त हो, अलंकार गुण भार।।

अनुशासन का व्याकरण, पद लालित्य अनूप।
छंद बद्ध हर पल रहे, कथ्य शास्त्र अनुरूप।।

जीवन पुस्तक में नहीं, यदि बातें उपरोक्त।
श्याम वर्ण पुस्तक लगे, जीवन जैसे शोक।।

अल्ट्रामार्डन हो गये, काव्य और सब लोग।
हर बंधन को तोड़ कर, करते नव्य प्रयोग।।

प्रगतिवाद के नाम पर, शब्द धरे बस जोड़।
भाग रहा जीवन यहाँ, गर्दन प्रेम मरोड़।।

आप बताओ क्या सही, अनुशासन का भंग।
जीवन पुस्तक में रखो, मर्यादा का ढंग।।

गंग नहाये जात हैं, दूर करै तन पाप।
जौ उनका पापी कहौं, क्यों कर हो संताप।।

माँ पत्नी भगिनी चहौं, ममता सेवा प्यार।
बेटी जनकर दुखी क्यों, हो जाते सरकार।।

आशा मन अच्छा करैं, लोग बाग बर्ताव।
क्यों रखते कुछ एक से, निज मन में दुर्भाव।।

अनुशासन जन में रहे, बना देश कानून।
क्यों होता है तब यहाँ, रोज कत्ल कानून।।

अंधे से नहि पूछते, बुरे भले की बात।
अंधा तो कानून भी, शरण चले क्यों जात।।

ललचाइ अंखियाँ लखै, तिरिया बेटी आन।
जौ कोई इनकै लखै, काहे कहौ पिरान।।

भारत भ्रष्टाचार में, डूबै औ उतराय।
रहा धर्म अवलम्ब जो, निर्मल राखिन नाय।।

जीवन और विकास

जीवन का आधार कहाँ है, आफत सिर पर भारी।
अपने में ही लिप्त घूमती, पागल दुनिया सारी।।
समय किसी के पास नहीं है, जीवन भागा दौड़ी।
प्यार-व्यार का रिश्ता झूठा, नफरत दरिया चौड़ी।।
कहाँ बची है वही मनुजता, मानव कहाँ पुराना।
और अधिक विकसित है दुनिया, मार्डन हुआ जमाना।।
वृद्धों का सम्मान कहाँ है, छूकर चरन नमस्ते।
हाय किये बाइक पर बैठे, पब या क्लब के रस्ते।।
दादा-दादी की परी-कथा, पोता कहे पुरानी।
साबू नागराज के आगे, फीकी सभी कहानी।।
परमाणू के हाथ सृष्टि है, यदि विस्फोट कहीं हो।
क्षणभर में सोने की नगरी, मिटकर धूल मिली हो।।
जीवन बंदूकों में बसता, प्राण समझ लो गोली।
किस गोली पर मौत लिखी हो, रब जाने या गोली।।
पैसा पैसा औ बस पैसा, पैसा सब पर भारी।
पैसे के खातिर सब करते, बिन अच्छा भला विचारी।।
ऐसा विकास इस दुनिया का, जाने कहाँ रुकेगा।
बम फूटे या धरती पलटे, ईश्वर रूप धरेगा।।

कोरा भौकाल

भूखी आंतों के लिए,
सेंसेक्स बस बवाल है।
तीसमार खां कह रहे,
मार्केट में उछाल है।।

जेब नहीं कौड़ी फुटी,
जनता सब बेहाल है।
भारत विकसित हो रहा,
वाह! बढ़िया कमाल है।।

कर्ज बोझ सिर पे लदा,
कृषक हुआ बदहाल है।
हम विकसित हो जायगें,
यह कोरा भौकाल है।।

आंधी भ्रष्टाचार की,
भारत में पुरजोर है।
महगाई की मार से,
आम मनुज कमजोर है।।

जन रक्षक भक्षक हुये,
त्राहि त्राहि चहुँओर है।
किसके दर पर जाय हम,
हर कोई घुसखोर है।।

यह भी अपना देश है,
रहा ज्ञान का खान जो।
इस पर भी अभिमान करें,
हम पा रहे सम्मान जो।।

पानी

रहिमन आये याद, हमें तुम्हारा पानी।
घटा जलस्तर किन्तु, बढ़ा आँखों में पानी।।

मोती चूना और, मनुज सभी गये सूखे।
प्यासी सारी भूमि, त्राहि-त्राहि जन चीखे।।

पिघल रहा हिमवान, जलधि तल ऊपर आया।
क्षरण परत ओजोन, काल की काली छाया।।

ऑक्सीजन में कमी, वायु में कार्बन भारी।
मलवे से है पटी, प्रदूषित नदियाँ सारी।।

खरबों रुपया खर्च, नदी को सफवाने में।
सारा रुपया साफ, नदी बस दिखलाने में।।

यूँ ही जल का नाश, जगत में यदि है जारी।
महायुद्ध की बात?न! महाप्रलय तैयारी।।

धरा बचा लें नीर, बचाना जीवन चाहें।
यही भले की बात, यदि हम प्रलय न चाहें।।

जीवन का अर्थ

फूलों सा मधुहास, घोल जग को महकाऊँ।
या तितली सम डोल, डोल खुशियाँ बिखराऊँ।।

जुगनू बन घनघोर, तिमिर में प्रकाश भरना।
शलभ सृदश इस प्रेम, यज्ञ में स्व अर्पण करना।।

नहीं सिर्फ उपमान, प्रृकित अभिधान सभी हैं।
प्रतिपग देते सीख, किन्तु अज्ञान हमीं हैं।।

कुछ लें इनसे सीख, नहीं जीवन से उलझे।
खुशियाँ, हास, प्रकाश, प्रेममय जीवन समझें।।

गीत - काल

कठिन काल के आवेगों से, कभी नहीं बच पाओगे,
परिवर्तन ही सत्य जगत का, सच को कहा छुपाओगे।
लौह सदृश इस सुगढ़ देह को, देख नहीं इतराओ तुम,
जब आयेगी काल की आंधी, तिनके सम उड़ जाओगे।।

ध्वस्त हुआ रावण का सपना, जो त्रैलोक्य विजेता था,
अस्त हुआ साम्राज्य ब्रिटिश का, अस्त सूर्य ना होता था।
मिटा सिकंदर विश्व विजेता, नेपोलियन बर्बाद हुआ,
अहंकार यदि नष्ट हुआ ना, मिट्टी में मिल जाओगे।।

ईश अंश श्रीराम कृष्ण भी, छोड़ धरा को चले गये,
कालजयी वो भीष्म पितामह, शर-शैय्या से बिंधे गये।
दस सहस्र गज सम बल वाला, भीम काल में समा गया,
ईश नहीं जब बचे काल से, कहो कहाँ बच पाओगे।।

काक और हंस

काक अधम मल खोद खा, बनते चतुर सुजान।
हंस वंश विस्मृत हुए, धर्म कर्म सद्ज्ञान।।
धर्म कर्म सद्ज्ञान, दिखावा बस करते हैं।
लूट लूट धन शिष्य, तिजोरी निज भरते हैं।।
यूँ अविवेकी लोग, कांव ही करते हरदम।
नीर क्षीर का ज्ञान, रखता नहीं काक अधम।।

महिषी चोरी हो गयी, मंत्री जी की आज।
हमें समझ में आ गया, कि कानून का राज।।
कि कानून का राज, और नित दंगा होता।
यहाँ सुशासन रोज, सड़क पर नंगा होता।।
करते बर्बर लोग, न्याय की ऐसी तैसी।
जनता है हैरान, कहाँ गायब भै महिषी।।

संसद

चुन गुण्डे संसद गये, करते हैं उत्पात।
लोकतंत्र के माथ पर, यह कलंक की बात।।
यह कलंक की बात, लात घूसा चलता है।
मिर्च पाउडर फेंक, नोच माइक देता है।।
देना हमें जवाब, आज गुण्डों को सुन।
भेजें सज्जन लोग, देश हित में हम चुन।।

भारत के इतिहास में, है काला अध्याय।
संसद में फेंका गया, जूता चप्पल हाय।।
जूता चप्पल हाय, नहीं क्यों उनको मारे।
चुनकर नमक हराम, गये संसद जो सारे।।
करते हैं खिलवाड़, तनिक न आये लज्जत।
पापी पामर नीच, कलंकित करता भारत।।

संसद की गरिमा घटी, घटा देश का मान।
लुटा ठगा लगने लगा, आज आम इंसान।।
आज आम इंसान, परिस्थिति का मारा है।
किंकर्तव्यविमूढ़, नहीं कोई चारा है।।
नेता दुर्गुण खान, कलंकित करते महिमा।
घटा देश का मान, घटी संसद की गरिमा।।

शाश्वत प्रेम

शाश्वत प्रेम सदैव है, सृष्टि आदि अनुमन्य।
यह ईश्वर का अंग है, करके सब हों धन्य।।
करके सब हो धन्य, जगत का सार यही है।
वश में होते ईश, प्रेम का काट नहीं है।।
कबिरा मीरा सूर, शशी आदिक इसमें रत।
नहीं वासना युक्त, प्रेम तो सत्व शाश्वत।।

बहती गंगा प्रेम यह, बाँध सका नहिं कोय।
अन्हवाये तन प्रेम में, हर मन निर्मल होय।।
हर मन निर्मल होय, कलुष अंतर का मिटता।
नहीं वासना युक्त, प्रेम वश ईश्वर मिलता।।
निकल अचल हिमवान, सिन्धु चंचल में मिलती।
गंगा प्रेम प्रतीक, निरंतर कलकल बहती।।

रचें छंद में काव्य

छंदों में ही बात हो, छंदों में लें साँस।
छंदबद्ध कविता रचें, नित्य करें अभ्यास।।
नित्य करें अभ्यास, शिल्प तब सधता जाये।
लेकिन भाव प्रधान, नहीं इसको बिसरायें।।
अंलकार, रस, छंद, और गुण हो शब्दों में।
वेद मंत्र की शक्ति, निहित तब हो छंदो में।।

कविता तो मिल जायगी, यदि हो कवि की दृष्टि।
जिसका जितना पात्र हो, भर पाता जल वृष्टि।।
भर पाता जलवृष्टि, ठीक कविता ऐसी है।
मन में उठी तरंग, और सरिता जैसी है।।
कहे विनय नादान, सिन्धु से मिलती सरिता।
भाव सिन्धु में डूब, तभी मिलती है कविता।।

प्रेम पर्व होली

होली के हुड़दंग में, डूबा सारा गाँव।
बालक वृद्ध जवान सब, एक सदृश बर्ताव।।
एक सदृश बर्ताव, करें हिल-मिल नर नारी।
उड़ते रंग गुलाल, संग मारें पिचकारी।।
होली प्रेम प्रतीक, सभी लगते हमजोली।
मिटा हृदय के बैर, बंधु खेलें हम होली।।

डटकर पी ली भंग तन, मन पे काबू नाय।
भाभी से देवर कहे, रंग दूँ गाल लगाय।।
रंग दूँ गाल लगाय, बुरा मानो तुम चाहे।
हाबी फागु आज, जवानी जोश चढ़ा है।।
इतना करो न नाज, कहाँ जाओगी बचकर।
चढ़ा भंग का रंग, रंग खेलेंगे डटकर।।

कद्दू बोला सेम से, अरी छबीली नार।
लैला-मजनू की तरह, करता तुझसे प्यार।।
करता तुझसे प्यार, मुझे तू न मत करना।
रहना दिल के पास, मुझे बाँहों में भरना।।
तुझसे करना प्यार, अरे जा रे बुद्धू।
ब्याहे राहुल मोहि, राह से हट जा कद्दू।।

गाँव और विकास

कंह गोरी पनघट कहाँ, कंह पीपल की छाँव।
पगडंडी दिखती नहीं, बदल रहा है गाँव।।
बदल रहा है गाँव, खत्म है भाईचारा।
कुछ परिवर्तन ठीक, किन्तु कुछ नहीं गवारा।।
ग्लोबल होते गाँव, गाँव की मार्डन छोरी।
कहें विनय नादान, कहाँ पनघट कंह गोरी।।

पगडंडी ये गाँव की, सड़क बनी बेजोड़।
जो जाती है शहर को, जन्म-भूमि को छोड़।।
जन्म-भूमि को छोड़, कमाने रोजी जाते।
करते दिनभर काम, रात फुटपाथ बिताते।।
भर विकास का दम्भ, शहर कितना पाखंडी।
हमको आये याद, गाँव की वो पगडंडी।।

भोला बचपन

भोले भाले बालकों की तोतली है बोली प्यारी,
सरल सहज ये चपलता सुहाती है।।
नन्हें-नन्हें पैरों से ठुमुक ठुम भागते हैं,
देखना नयन भर छाती को जुड़ाती है।।
गिरते हुए भूमि माँ कहके पुकारे जब,
दौड़ के उठा के माँ हृदय से लगाती है।
जानती है लाल गिर-गिर के उठेगा जब,
तभी दौड़ पाये किन्तु वेदना जताती है।।

बच्चों के प्रश्न

च्वंइगम चबाने नहीं देते हैं पापा मुझे,
दिनभर पान किन्तु खुद क्यों चबाते हैं।
कहते हैं छोटे हो साइकिल चलाओ नहीं,
तेज रफ्तार रोड गाड़ी क्यों चलाते हैं।।
घर से बाहर मुझे खेलने न देते शाम,
पीकर शराब देर रात घर आते हैं।।
कहते हैं आपस में लड़ना है ठीक नहीं,
मम्मी के ऊपर रोज लाठी क्यों उठाते हैं।।

राजनीतिक दंश

ये राजनीति दंश है, कौरव कंस वंश है,
ईश यदुवंश अवतार होना चाहिए।
लुटेरे या भिखारी हैं, अथवा भ्रष्टाचारी हैं,
इनसे तो युद्ध आर पार होना चाहिए।।
क्रान्ति आज आहवान, तोड़ सब व्यवधान,
अब हिन्दुस्तान में हुंकार होना चाहिए।
भ्रष्टतंत्र ध्वस्त तंत्र, विकृत विक्षिप्त तंत्र,
गणतंत्र हंत पे प्रहार होना चाहिए।।

कवि एक अदभुत जीव

जीवों में मनुज श्रेष्ठ, मनुजों में ज्ञानवान,
ज्ञानवान कर्मवीर, अति ही सुहाते हैं।
कर्मवीर धीर वीर, हो तो बने बात क्या ही,
नेक गुणवान देश, यश को बढ़ाते हैं।।
येते गुणवान मिलि, ईश तब एक बार,
धरती पे कोई एक, कवि को बनाते हैं।।
इसीलिये एक जीव, शारदा के पुत्र में ही,
उपरोक्त सभी गुण, एक साथ आते हैं।।

लाज आज नारियों की देश में बचाइए

देश में विदेश के सलाहकार सेनदार,
प्रीति में अनीति रीति, भूल के न लाइए।
नीतिवान बुद्धिमान, राजकाज जानकार,
नेक राज एक बार, देश में बनाइए।।
जाति-पांति भेद-भाव, ऊँच-नीच के दुराव,
हैं समाज कोढ़-घाव, दूर छोड़ आइए।
देवियाँ करें पुकार, तात मान एक बात,
लाज आज नारियों की, देश में बचाइए।।

सैनिक शहीद हुए, फिर नाउम्मीद हुए,
मौन सरकार आज, कोई तो बुलाइए।।
राज फरमान जारी, सोलह की उम्र न्यारी,
प्यारियों से रास खूब, जमके रचाइए।।
कानून गया भाड़ में, खुदकुशी तिहाड़ में,
खोखली सरकार को, जड़ से मिटाइए।।
माँ भारती पुकारती, हैं देवियाँ गुहारती,
लाज आज नारियों की, देश में बचाइए।।

नारियों के सम्मान में, मिल अभियान करें,
लाज आज देवियों का, देश में बचाइए।।
प्रेम की प्रतीक नारी, जीवन सरीक नारी,
माँ-बहन रूप नारी, सकल बचाइए।।
नारियाँ जो नहीं रहीं, नर भी बचेंगे नहीं,
प्रकृति और पुरुष, रूप को बचाइए।।
दुर्गा-भवानी पूजे, घर में बहू को फूँकें,
बेटी-भ्रूण कोख मारें, सृष्टि को बचाइए।।

आँखें तो बस झरना हैं

आँखें तो बस झरना हैं
आँसू की नदिया को इससे, निशदिन बहना है।।

पता नहीं रिश्तों के माने, मुझको उनका कहना है।
रिश्तों के पौधों को क्या, नयन नीर से सिंचना है?

सम्बंधों का जाल विकट है, इसमें प्रतिपग छलना है।
दंत पंक्ति के बीच जीभ सम, इसमें हमको रहना है।।

सब अपनी ही ताक में बैठे, दाँव मिले तो ठगना है।
हम तो हैं यह सोच के बैठे, हमको भी अब लुटना है।।

अपनी अपनी सबकी पीड़ा, अपनी किससे कहना है?
अगर किसी से कहना चाहूँ, कौन यहाँ पर अपना है?

सुनकर मेरे दुख हंसते हैं, अतः मौन ही रहना है।
नहीं रहे सुख सदा अगर, कहाँ दुखों को रहना है।।

आभासी रिश्ते

आभासी रिश्ते कब तक टिकते हैं?
कब तक जीएँ स्वप्न लोक में, स्वप्न सदा ही टुटते हैं।।

आज जुड़े परवान चढ़े कल, परसों तक ये कब रहते हैं?
इन रिश्तों में उलझ–उलझकर, अपना व्यर्थ समय करते हैं।।

सबका अपना जीवन होता, अपने विधि से सब जीते हैं।
निजी क्षेत्र में कभी किसी के, नहीं भूलकर भी घुसते हैं।।

उनकी अपनी सुन्दर दुनिया, जिसमें वे नित खुश रहते हैं।
बनकर राहु सूर्य की खुशियाँ, आखिर हम क्यों ग्रसते हैं?

आज मिला यह ज्ञान मुझे, अपने हद में ही रहते हैं।
कितना ही आत्मिय हो कोई, पार नहीं निज हद करते हैं।।

अपना आपा खो सकता है, उसके हद को जब छूते हैं।
अपना है सम्मान इसी में, उससे दूर स्वतः रहते हैं।।

यदि मैं भी रावण बन जाऊँ

यदि मैं भी रावण बन जाऊँ।
इन्द्रिय लोलुप इन्द्र विरुद्ध मैं, इन्द्रजीत सुत जाऊँ।।
धरे लूट धन धन कुबेर जो, उसको अभी छुड़ाऊँ।
भंग करे जो भगिनि अस्मिता, अंग भंग करवाऊँ।।
घर के भेदी को तत्क्षण मैं, घर से दूर भगाऊँ।
आँख उठाये देश तरफ वो, सिर धड़ से अलग कराऊँ।।
बैरी बनकर ईश भी आएँ, उनसे बैर उठाऊँ।
नहीं देश में घुसने दूँ मैं, दसों शीश कटवाऊँ।
कर विकास निज मातृभूमि का, लंका स्वर्ण बनाऊँ।।
वैज्ञानिक तकनीकि उन्नति, स्वर्ग धरा पर लाऊँ।।
शनि सम क्रूर जनों को अपने, वश कर नाच नचाऊँ।।
पवन, अग्नि, जल, सूर्य, चंद्र को, निज अनुकूल बनाऊँ।
वयं रक्ष सह शांति मंत्र यह, जन-जन में पहुंचाऊँ।।

सावन

सावन में गरजे बदरा,
मन मोर नचौ वन कानन में।
कानन में मनमोह छटा,
घनघोर घटा घिरि गागन में।।
गागन में चमके बिजुरी,
सिकुरी सुनरी निज आंगन में।
आंगन में वै बइठी तकैं,
फिर आये नहीं पिय सावन में।।

झूलति हैं सखियाँ झुलना,
मन मा बहुभांति से फूलति हैं।
फूलति हैं पियपेंग चढ़े,
निज होश औ चेत को भूलति हैं।।
भूलति हैं कित रात गई,
मधुराग अकाश में घूलति हैं।
घूलति हैं बरसात जला,
हरषात पिया संग झूलति हैं।।

वास्ता

नहीं जब वास्ता रखना बने थे मीत क्यों बोलो?
लगाकर प्रीति का बंधन बने हो तीत क्यों बोलो?

दिवाली इस तरह होगी हमारी हार पर तेरी।
तुम्हारी जीत कह देते हमारी जीत क्यों बोलो?

हमें हरगिज न मालुम था कि दूरी इस कदर होगी।
तुम्हारे वास्ते अपनी गिराते भीत क्यों बोलो?

कहो क्या मिल गया तुमको भला मुझको दगा देकर?
खतां इतनी है क्या मेरी जो तोड़ी रीत क्यों बोलो?

सफर तन्हा ही कट जाता चले तन्हा ही थे घर से।
चलोगे साथ तुम मेरे दिया परतीत क्यों बोलो?

कोई अपना सा हो

कोई अपना सा हो जिससे अपनी बातें हों।
कुछ दिल की बातें हों सुख दुख की बातें हों।।

आओ चलकर नदिया तट पर कुछ पल बैठे हम।
प्यार मुहब्बत उल्फत की रूमानी बातें हो।।

पूरनमासी रात सुहानी सब नीरव नीरव है।
आ बैठे खामोशी में रूहानी बातें हों।।

रात कि रानी की गलियों में रातें रंगी हैं।
रानी के मन सिसक रही वीरानी बातें हों।।

अच्छी लगती हैं बातें जो निश्छल होती हैं।
माँ की घुड़की या शिशु की बचकानी बातें हों।।

मानव अपनी मानवता को ऐसे भूल गया।
सत्य अहिंसा दया धर्म सब बेमानी बातें हों।।

प्रेम का अर्थ

प्रेम का अर्थ उनको समझ आ गया।
रंग उल्फत का शायद उन्हें भा गया।।

तंज कसते थे अब तक मेरी आशिकी पे।
अब उन्हें आशिकी में मजा आ गया।।

बहकी बहकी जुबां है कदम लड़खड़ा।
एक कतरा पिया औ नशा छा गया।।

अपनी सूरत पे है बदगुमां चाँदनी।
सारी दुनिया का सूरत है बख्शा गया।।

फूटी किस्मत पे मेरे जो हंसते रहे हैं।
अपनी किस्मत पे रोना उन्हें आ गया।।

महजबी

मेरी आँखों में मस्ती सी छाने लगी।
महजबीं रात सपने में आने लगी।।

दिन में तारी है मुझ पे उसी का नशा।
शाम की जाम दिल को जलाने लगी।।

रात ढलते ही पलकों के कमरे में आई।
मखमली याद बिस्तर सजाने लगी।।

गुलबदन छू के बोली, हैं प्यासे अधर।
शारदा खुद ही वीणा बजाने लगी।।

वादि-ए-हुश्न में रात गुजरी मेरी।
चाँदनी राहे-उल्फत दिखाने लगी।।

खूब खुश था हंसी ख्वाब मैं देखकर।
सातों सरगम दिशाएँ बजाने लगी।।

अब तेरा परदे में छुपना मुश्किल है

अब तेरा परदे में छुपना मुश्किल है।
अपने आगे दरपन रखना मुश्किल है।।

तुमने मुझको इतना डरा दिया मालिक।
अब मेरा तुमसे कुछ डरना मुश्किल है।।

सुख के सौदागर यां हर सूं बसते हैं।
हंसी खुशी से मेरा रहना मुश्किल है।।

हर कोई अपना दो चेहरा रखता है।
जो है अंदर बाहर दिखना मुश्किल है।।

मन माफिक मैं सच्चा ढूढूँ मीत कोई।
बाजारू दुनिया में मिलना मुश्किल है।।

रिश्तों का जीवन अब धन तय करते हैं।
क्या बिन धन के रिश्ता निभना मुश्किल है?

ठान लिया हूँ चलना मंजिल पाने तक।
अवरोधों से मेरा रुकना मुश्किल है।।

इतना रोये अब तक आँसू सूख गये।
तेरे गम में आँसू गिरना मुश्किल है।।

ठोकर खाकर जान गया हूँ दुनिया को।
झूठे जज्बातों में बहना मुश्किल है।।

बड़े मियां तुम सच्चे मैं तो झूठा हूँ।
हूँ छोटा तो झूठा वरना मुश्किल है।।

क्या हुआ

इश्क मुझसे वो कभी करती नहीं तो क्या हुआ।
कसके मुझको बाँह में भरती नहीं तो क्या हुआ।।

उसके दर पे चल के उल्फत आजमाते हैं।
अबकी किस्मत आपकी चमकी नहीं तो क्या हुआ।।

इश्क का मारा हूँ मैं जीता हूँ उसका नाम ले।
उसको मेरी याद भी आती नहीं तो क्या हुआ।।

मैखाने में आए हो गर कुछ बात पीने की करो।
खुद ही कुछ जाम भर साकी नहीं तो क्या हुआ।।

उससे मिलने आज भी जाता हूँ दरिया पे मगर।
वो ही मुझसे आजतक मिलती नहीं तो क्या हुआ।।

प्यार वर्षों का मेरा उसको फकत मालूम हो।
गर मुझे अपना कभी मानी नहीं तो क्या हुआ।।

शौक बचपन से गजल कहने और सुनने का।
आज भी अच्छी गजल बनती नहीं तो क्या हुआ।।

वो आँखें

खिला धूप चेहरा मदमाती वो आँखें।
सुर्ख से अधर, पर शर्माती वो आँखें।।

देखूँ जो नजर भर चुराती वो आँखें।
हटे जो नजर तो बल खाती वो आँखें।।

लगे दर्द दिल में छुपाती वो आँखें।
छुपे राजे दिल को बताती वो आँखें।।

क्यों ही न जाने दिल जलाती वो आँखें।
बहा अश्क फिर से बुझाती वो आँखें।।

सब्र के अब्र को छेद जाती वो आँखें।
अब्र से आब ले बरसाती वो आँखें।।

सुनो दोस्त मेरे मदमाती वो आँखें।
ज़िन्दगी की गजल गुनगुनाती वो आँखें।।

मूर्ख बनाना बंद करो

भोली जनता को नेता जी मूर्ख बनाना बंद करो।
जनता जाग गई अब दिल्ली धौंस दिखाना बंद करो।।

जन्तर मन्तर से जनता का आजादी अभियान शुरू।
झूठे वादे तानाशाही गया जमाना बंद करो।।

हम सब के मत से ही नेता तुम इतने मतवाले हो।
है तेरी कुछ औकात नहीं रौब दिखाना बंद करो।।

चूस रहे हो खून हमारा अब हमको अहसास हुआ।
शहद लगे विषधर डंकों को पीठ चुभाना बंद करो।।

हम सबके श्रम के पैसों से पाल रहे हो तुम गुण्डे।
परदे के पीछे से छुपकर तीर चलाना बंद करो।।

हुंकार उठे हैं अब प्यादे खैर मनाओ राजा जी।
शतरंजी भाड़े के घोड़ों कूद लगाना बंद करो।।

जब जब धरती के धूल उड़े तब-तब आँधी आयी है।
इसके आगे महल उड़े हैं शामियाना बंद करो।।

औरत

खुले शहरों में मेरी मुस्कराहट अदा है।
बंद शहरों में हमारी अदा ही कजा है।।

खुले शहरों में भी खिलखिलाना मना है।
यही सवाल मेरा इसकी क्या वजा है।।

यूँ तो मेरे चाम से मुहब्बत है सबको।
फिर छोटा सा ये क्यों मेरा आसमां है।।

यह तो मुझे बताओ दिल पे हाथ रखकर।
तेरे खुदा से बदतर क्या मेरा खुदा है।।

क्या उसी गुम खुदा की मैं कुदरत नहीं।
गर मेरा नहीं तो क्या तुम्हारा पता है।।

दोगली दुनिया से हम और क्या कहें।
हर सुबूत पेश फिर भी पूछता कहाँ है।।

कर्ण

जाने कितने कर्ण जन्मते यहाँ गली फुटपाथों पर।
या गंदी बस्ती के भीतर या कुन्ती के जज्बातों पर।।

कुन्ती इन्हें नहीं अपनाती न ही राधा मिलती है।
इसीलिए इनके मन में विद्रोह अग्नि जलती है।।

द्रोण गुरु से डांट मिली और परशुराम का श्राप मिला।
जाति-पांति और भेदभाव का जीवन में है सूर्य खिला।।

सभ्य समाज में कर्ण यहाँ जब-जब ठुकराये जाते हैं।
दुर्योधन के गले सहर्ष तब-तब ये लगाये जाते हैं।।

इनके भीतर का सूर्य किन्तु इन्हें व्यथित करता रहता।
भीतर ही भीतर इनकी आत्मा को मथता रहता।।

महलों में पले-बढ़े अर्जुन को चुनौती देते हैं।
बनकर कृष्ण ढाल उनका इनको डस लेते हैं।।

ये भीतर ही भीतर खुद से लड़ते रहते हैं।
जो नीति व्यवस्था इन्हें कुचलती उसे कुचलते रहते हैं।।

कहो बंधु! कर्णों के पीछे किसकी कुत्सित चाल छिपी।
दुर्वासा का वर या कुन्ती की पहली गलती।।

सूरजों का बहशीपन या और व्यवस्था कोई है।
देख कर्ण की दीन दशा को अपनी आत्मा रोई है।।

इन्हें दिला दो हक इनका जिसके ये अधिकारी हैं।
नहीं धकेलों इन्हें परिधि में ये धीर-वीर व्रतधारी हैं।।

चल चंदा उस ओर

चल चंदा उस ओर,
जहाँ नहाती प्रिया सुन्दरी थामें आंचल कोर ।

स्वच्छ चाँदनी छटा दिखाना,
भूलूं यदि तो राह दिखाना।
विस्मृत हो जाए तन सुध तो,
देना तन झकझोर.........................।

मस्त बसंती हवा बहाना,
उसको प्रिय का पता बताना।
हवा तनिक भूले पथ जो,
कर देना उस ओर........................।

देख निशा गहराती जाती,
बुझती लौ घटती रे बाती।
लौ तनिक तेज करना,
भरना सुखद अजोर....................।

सनी नीर से लता माधवी,
यौवन पूर्ण प्रिया साधवी।

जब तुम रहते हो पास मेरे

जब तुम रहते हो पास मेरे,
जग भरा भरा सा लगता है।
व्याकुल करती गमएॅ के ऋतु में,
मलय समीर बहा लगता है।

चिलचिल करती कड़क धूप में,
बरगद का छाँव मिला लगता है।
बारिस के मौसम में सिर पर,
मजबूत एक छत टिका लगता है।

कई दिनों से प्यासे मुख में,
शीतल नीर पड़ा लगता है।
कई दिनों से भूखे जन को,
मधुर भोज्य मिला लगता है।

एक अँधेरी अंजान गुफा में,
प्रकाश पुंज खिला लगता है।
कई जन्म से बिछड़ा प्रेमी,
इस जन्म में मिला लगता है।

किसी कुमारी के तन पर,
सुखद स्पर्श हुआ लगता है।
मरणासन्न रोगी के मुख में,
अमिय बिन्दु चुआ लगता है।

जब तुम रहते हो पास मेरे,
जग भरा भरा सा लगता है।

हाइकू

(1)

सुख औ दुरूख

प्रकृत या प्रारब्ध

मधु औ डंक।

(2)

आग औ धूम

प्रकाश संग तम

शराब गम।

(3)

आशा निराशा

कुछ पाने की आशा

पर हताशा।

(4)

मन है प्यासा

उत्कट अभिलाषा

जीत की आशा।

(5)
हार में जीत
हर जन से प्रीत
रहो निश्चिंत।

(6)
पाने की चाह
उमंग औ उत्साह
सरल राह।

(7)
एकाग्र दृष्टि
सफलता की वृष्टि
मन की तुष्टि।

(8)
धैर्य औ ध्यान
उत्साह का उफान
लक्ष्य संधान।

(9)
एक अंजान
कौन है भगवान
जो अंतर्ध्यान?

(10)

क्या है जीवन?

जीवन का उद्देश्य?

या निरुद्देश्य

(11)

जन्म मरण?

अमरत्व वरण?

भव तरण?

(12)

अब भी रहस्य

जीवन का सत्य

क्या है उद्देश्य?

(13)

संसार सार

प्रकाश अंधकार

या निस्सार?

कल्पद्रुम

मेरा नीड़ जिस पेड़ पर है
लोग उसे कल्पद्रुम कहते हैं
जनविश्रुत है-
वह सब कुछ देता है
जो उससे माँगा जाता है
क्या यह सच है?
मेरे देखने में तो नहीं।
क्यों?
क्योंकि
वह कल्पद्रुम खामोश सा
खड़ा रहता है
अहर्निश!!!
उसके पत्ते गिर रहे हैं
सड़-सड़ कर
टहनियाँ सूख रही हैं
जड़ें धीरे-धीरे
ऊपर आ रहीं हैं
वह प्यासा मर रहा है
एक घूँट पानी बिन
कार्बन डाई ऑक्साइड के बजाय
ऑक्सीजन ले रहा है

अब वह खामोश हो
केवल
आगंतुकों का चेहरा देखता है
समाधिस्थ योगी सा
टुकुर!
टुकुर!!
टुकुर!!!
अब पंक्षी
उस पर बीट नहीं करते
क्योंकि
अब उस पर
फूल ही नहीं लगते
पहले वह परेशान होता था
झल्लाता था
जब हम कलरव करते थे
अपनी झल्लाहट प्रकट करता था
जोर से हिलकर
मगर अब जड़वत है
कभी–कभी काँप जाती हैं
उसकी सूखी टहनियाँ
हवा के वेग से
इसीलिए अब मैं भी
इसे छोड़कर उड़ने वाला हूँ
क्योंकि मेरे अंडे
महफूज नहीं हैं
अच्छा!

भीष्म की प्रतिज्ञा

मैं दृढ़व्रती भीष्म
पड़ा व्यथित शर-शैय्या पर
सोंच रहा हूँ
अपने संकल्पित व्रत को
बंधा रहा जिससे मैं
आजन्म!
किन्तु मिला क्या?
भातृ संग में पक्षपात
नारी का मान-हरण
कुरुक्षेत्र के समरांगण में
रक्त-पिपासु तलवारें
गर्वोन्नत भीम-गदा
टंकारित गाण्डीव
और अंत में
वीरवरों की लथपथ लाशें
क्रंदन!
चीख!
पुकार!
नववधुओं का विलाप
माताओं का करुण-क्रंदन
गूँज रही हैं मेरे कानों में

अब भी
देख रहा हूँ
तिलतिल टूटते उस सिंहासन को
जिसकी खातिर मैंने
उत्सर्ग किया निज
देख रहा हूँ
खण्ड-खण्ड होते भारत को
देख रहा हूँ
अपने कुल का मैं विनाश
क्या मैं ही हेतु नहीं इसका?
शायद हाँ!
पर डरता हूँ सच से
क्योंकि चुभता है वो
पर कह सकता हूँ
यह व्रत है उत्तरदायी इसका
इस व्रत से क्या पाया मैंने?
सब कुछ खोया है
हाँ! सब कुछ खोया है।

बचपन मेरा भाग गया है

डूब गया बचपन प्यारा सा
डिम हो गयी किलकारी
गुड्डे-गुड्डी टूट गए सब
फट गई टोपी जरतारी
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

बिखर गए सब घर घरौंदे
गिल्ली के डंडे टूट गए
कबड्डी की टीम छितरा गई
आँख मिचौली के अड्डे उजड़ गए
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

पतंग मेरी जो लटकी थी
हेलीकॉप्टर से उतारूँगा
अपनी गायब गिल्ली को
रिव,ल्वर लेकर ढूढूंगा
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।
दादी से नहीं सुनुँगा रामायण
कॉमिक्स हमारा आया है

हनुमान आदर्श नहीं अब
साबू हमारा प्यारा है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

वीडियोगेम ही मेरा
अब छुपा-छुपी का खेल है
मिट्टी के रेलों से क्या मतलब
जब रियल हमारा रेल है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

अब दूध में वह नहीं जायका
जो क,म्पलैन में आता है
ब,न्वीटा का तो क्या कहना
वही तो मुझको भाता है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

वह दिन अब भूल गया हूँ
जब माँ हमको दूध पिलाती थी
न पीने पर वह छड़ी से
प्यार से मार खिलाती थी
कम से कम अब तो उससे
पिण्ड हमारा छूट गया
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

कसरत मल्ल से क्या मतलब
जब कट्टा मेरे हाथ है
चाकू मेरी में है
रिमोट बम भी साथ है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

पोटम पढ़ने में कहाँ मजा
जब रीमिक्स का कैसेट घर में है
मक्खन मिस्री में क्या मजा
जब च,कलेट मुँह में है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

कहाँ से पकड़ूँ कलम-दवात
जब कप-प्लेट है हाथ में
हस्ता कैसे सिर पर ढोऊँ
जब गारे का तसला माथ पे
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।
कैसे सीखूँ सोशल विहैवर
जब गाली मुझको मिलती है
बुरा करूँ तो मैं साला
अच्छे पे माँ साली बनती है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

कैसे सीखूँ नारी इज्जत
जब माँ का इज्जत लुटता है
आखिर भाई पेट के खातिर
कुछ तो करना पड़ता है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

जिस घर में माँ झाड़ू करती है
मालिक उसको तड़ता है
ताक-तूक लखि सून सान
सीने से उसे लगाता है
बेबस बेचारी सी माँ
बिबस तड़पती रहती है
सनरौ पाती जब भी मालकिन
माँ को ही डपटती है
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।
पाँच बरस के सब साथी
आठ बरस में परदेश गए
कैसे खेलूँ लुका-छिपी
वे अब भदेस भए
बचपन मेरा भाग गया है
क्योंकि
जमाना कम्प्यूटर का आ गया है।

नव मन की नव कल्पना

नव मन की नव कल्पना,
नव अन्नत में उड़ने की है।
समस्त जगत के अंदर,
नव चेतना भरने की है।।

चाहता है यह नव मन,
मेरा संसार नवल हो जाए।
प्रेम क्षमा दया करुणा,
हर जन उर अंतर भर जाए।।

सब बन जाएँ अपने भाई,
ऊँच नीच भेद मिट जाए।
देश जाति धर्म भाषा के,
बंधन सारे टूट जाएँ।।

सब पर सब विश्वास करें,
अविश्वास की न हो रेखा।
इस मेरे नव मन ने भाई,
बस यही है सपना देखा।।

सार छंद, बाल गीत - कोयल दीदी

कोयल दीदी! कोयल दीदी! मन बसंत बौराया।
सुरभित अलसित मधु मय मौसम, रसिक हृदय को भाया।।

कोयल दीदी! कोयल दीदी! वन बंसत ले आयी।
कूं कूं उसकी बोली प्यारी, हर जन मन को भायी।।

कोयल दीदी! कोयल दीदी! बागों में फूल खिले।
लोभी भौंरे कलियों का भी, रस निर्दय चूस चले।।

कोयल दीदी! कोयल दीदी! साजन घर को जाओ।
मुझ विरहा की विरह वेदना, निष्ठुर पिया सुनाओ।।

कोयल दीदी! कोयल दीदी! कू कू करके गाए।
जग में मीठी बोली अच्छी, राग द्वेष मिट जाए।।

कोयल दीदी! कोयल दीदी! तुम हो भोली भाली।
तेरी अंडा कौआ खाये, उसकी कर रखवाली।।

कोयल दीदी! कोयल दीदी! काला कौआ आया।
कांव-कांव का शोर मचाये, सबकी नींद उड़ाया।।

कोयल दीदी! कोयल दीदी! कौआ काला काना।
धूर्त बहुत मक्कारी उसमें, होता बड़ा सयाना।।

सार छंद - होली

ईचक दाना बीचक दाना, होली होली प्यारी।
भर पिचकारी साजन मारी, रंगी सारी सारी।।

ईचक दाना बीचक दाना, उड़ता रंग अबीरा।
हुलियारों की टोली आयी, गाते फाग कबीरा।।

ईचक दाना बीचक दाना, भंग चढ़ी अब हमको।
प्रेम पर्व होली है भाई, रंग दूँगा मैं सबको।।

ईचक दाना बीचक दाना, गुझिया हलवा पूरी।
गुलगुल्ला और छने जलेबी, खाये धनिया झूरी।।

ईचक दाना बीचक दाना, दादा दादी छुपकर।
छक्कर पीते भंग झूमते, रंग खेलते डटकर।।

ईचक दाना बीचक दाना, बड़ी तेज मंहगाई।
खाली थैली गर्म मार्केट, होली जाय भुलाई।।

पुछल्ले मुक्तक

उजाला चाहते हैं वज्म में खुद जलना होगा,
सफर तय करना है तो गिरकर सम्भलना होगा।
इतनी आसानी से मंजिल नहीं मिलती यारों,
जिन्दगी की रफ्तार को कुछ बदलना होगा।।

मंहगाई की रफ्तार यूँ बढ़ती जा रही है,
इसी के इर्द-गिर्द दुनिया सिमटती जा रही है।
तिस पर ये बेरोजगारी घोटाले और लूट,
ये जिन्दगी इक दलदल में बदलती जा रही है।।

सुना है उसने एक नई कार खरीद ली,
समझता है जिन्दगी में रफ्तार खरीद ली।
पर क्या पता उस नादान अहमक को,
अपने पाले में मुसीबत बेकार खरीद ली।।

जिन्दगी के भी कुछ उसूल होते हैं,
अगर हम उनके माकूल होते हैं।
तो होती है खुशियों की बारिस सदा,
अगरचे हर कदम पर शूल होते हैं।।

प्रेम मोबाइल में अगर, बैलेडिटी विश्वास हो,
नेटवर्क समन्वय हो पुख्ता, हृदय बैट्री चार्ज हो।
प्रतिपक्ष नम्बर रांग हो, एकांत स्पीकर साफ हो,
नहीं समस्या कोई यारोँ, प्रेम पगी तब बात हो।।

घायल नहीं हुआ कभी, जो तीर ओ तलवार से,
वो ही घायल हो गया, तेरे नजर के वार से।
पैदाइश से आज तक, जीत जिसकी हमसफर,
वो ही जीता जा चुका है, आज तेरे प्यार से।।

यार मैं तो रात का, शुक्र गुजार बन गया हूँ,
वो बन गये हैं वादक, मैं सितार बन गया हूँ।
बेदर्द बड़े प्यार से, बजाते हैं मुझको,
उनकी इस अदा पे, मैं झंकार बन गया हूँ।।

जमाना जुल्म ढाये तो, मुझे गम नहीं होगा,
वो रूठ भी जाएँ, सितम से कम नहीं होगा।
मुस्कराके इक नजर, बस देख ले मुझको,
ये खुदा के इनायत से, कम नहीं होगा।।

इधर आग की दरिया, उधर आब का समंदर है,
दोनों ही तरफ विन्ध्येश्वरी मौत का मंजर है।
हालात बड़े नाजुक हैं, कहो क्या करें,
सोचता हूँ खामोश, खड़े रहना ही बेहतर है।।

आल्हा छंद - यौवन

चढ़ल जवानी कै उदल जब, देहिया गढ़ के ऊपर नाय।
नैना यकटक देखन लागे, पुरवा चले देह घहराय।।

चन्द्रमुखी जब तिरछा ताकै, तन के आरपार होइ जाय।
मारै मुस्की जब धीरे से, दिल कै टूक-टूक उड़ि जाय।।

उड़ै दुप्ट्टा जब कान्हे से, मानौ दुइ गिरिवर बिलगाय।
देख के गोरिक भरी जवानी, लरिके मंद-मंद मुस्काय।।

आओ पंचो प्यार कै आल्हा, सुनि लौ आपन कान लगाय।
अइसन मौका फिर जिन्गी में, शायद मिलै न कब्भो आय।।

जेका यह जिन्गी में कब्भो, प्यार के रोग लगा है नाय।
मानों वै मानो कै जोनी, आपन विरथा दिहिन गवाय।।

दादा माइ मिलैं जनमतै, गोरिया मिलै जनमतै नाय।
जब्बै भइय्या मौका पाओ, चउवा छक्का मारौ जाय।।

प्रेम दिवस पर बुजुर्ग दम्पति

क्या हुआ अपना जमाना अब नही है।
बाजुओं में वो पुराना दम नहीं है।।

ढल चली है रात यौवन की भले ही।
इन दिलों में प्यार अब भी कम नहीं है।।

बढ़ चली है उम्र फिर भी प्यार गहरा है।
अंगूर अपना था मगर किसमिस भी मेरा है।।

क्या हुआ हम हर तरफ से बेकार हो गए।
जी लेगें बाकी जिन्दगी गर साथ तेरा है।।

यूँ तो अपने भी अब पराये हो गए।
दूर हमसे ही हमारे साये हो गए।।

बहुत गई थोड़ी रही कोई चिंता है नही।
प्रेम दिवस के पर्व लो हम तुम्हारे हो गए।।